संपादक के नोट

मैं मेरे प्रभु और मुक्तिदाता येशु मसीह के सर्वशक्तिमान नाम से तुम प्रिय पाठकों का अभिवादन करती हूँ। वह वही अपरिवर्तनीय परमेश्वर, कल, आज और हमेशा के लिए है। उसने मत्ती ६रू१२ में हमें सिखाया – और जैसे हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। हाँ, हम कर्ज़दार को क्षमा कर रहे हैं, क्योंकि येशु ने कलवरी के क्रूस पर हमारे सभी पापों को ले लिया, इसलिए हम अपने कर्ज़दार को क्षमा करने में सक्षम हैं। निश्चित रूप से हम कर्ज़दार को क्षमा कर रहे हैं। हमारे देश में बहुत–से हैं जो दूसरों को क्षमा नहीं कर सकते हैं। वे लंबे समय के लिए उनके दिल में कड़वाहट छिपाए रखते हैं। पवित्र–शास्त्र हमें क्षमा करने के लिए सिखाता है। अगर तुम रोज पवित्र–शास्त्र पढ़ते हो, यह हमें क्षमा का सच्चा प्यार सिखाता है। अपराधों के लिए निर्णय देने के लिए वहाँ अदालतें हैं। निर्णय को पूरा करने, बंदीगृहें और फांसी हैं। क्षमा करने के लिए केवल एक पुस्तक है, वह है पवित्र–शास्त्र। माफ़ी की शुरुआत एदेन की बारी में शुरू हुआ। एदेन की बारी में परमेश्वर का कानून यह था कि अगर तुम अच्छे और बुरे के ज्ञान के फल खाते हो, तुम निश्चित रूप से मर जाओगे। लेकिन जब मनुष्य ने मना किया हुआ फल खाया तब परमेश्वर का हृदय टूट गया। प्रभु ने जो आज्ञा दिया था कि निश्चित रूप से तू मर जाएगा, परमेश्वर तैयार था खुद अपने ही ऊपर लेने के लिए।

परमेश्वर ने अपने हृदय से हमें माफ़ कर दिया कलवरी के क्रूस पर, उसे मौत का सामना करना पड़ा जो अन्यथा हमें सामना करना पड़ता।

प्रभु से कोई माफ़ी नहीं होता तो हम सिर्फ़ धूल होते और नरक से ढके होते। आज तक, परमेश्वर ने हमें हमारे पापों को क्षमा किया है जिसकी वजह से हम जीवित हैं। तो अपनी आँखें ऊपर उठाएँ और, हमारे प्यारे परमेश्वर को देखें, विलम्ब से कोप करने वाला और अति करूणामय है। एक और नाम हमारे परमेश्वर को दिया गया वह है ष्एक परमेश्वर जो क्षमा करता है।ष नहेमायाह ९रू१७ – और उन्होंने सुनने से इनकार किया, और जो आश्चर्यकर्म तू ने उनके बीच किये थे उनका स्मरण न किया। उन्होंने हठीले बनकर एक अगुवे को नियुक्त किया कि मिस्र के दास्तव में लौट जाएं। परन्तु तू क्षमा करनेवाला, अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से कोप करनेवाला, और अति करूणामय परमेश्वर है, और तू ने उनको त्याग नहीं दिया। प्रभु पर ध्यान आँसू के साथ और हाँ। यिर्मयाह ३१रू३४ – तब उन्हें अपने अपने पड़ोसी और अपने अपने भाई को फिर यह सिखाना न पड़ेगा कि यहोवा को जानो,

क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जान जाएंगे क्योंकि मैं उनके अधर्म को क्षमा करूंगा और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा,९ यहोवा की यही वाणी है। वह फिर से, हम पर दया करेगा, और हमारे अधर्म के कामों को वश में करेगा वह हमारे सभी पापों को समुद्र की गहराई में फैंक देगा। पवित्र–शास्त्र कहता है इफिसियों १रू७ में – हमें, उसमें, उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् हमारे अपराधों की क्षमा, उसके अनुग्रह के धन के अनुसार मिली है। जब भी तुम देखते हो कलवरी के क्रूस पर, तुम समझोगे के कैसे बहुतायत दयालु हमारा परमेश्वर है। क्योंकि हमारे अपराधों के कारण येशु यशायाह ५३रू५ के अनुसार, पीड़ित हुआ – परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए। परमेश्वर की शांति तुम्हारे दिल में रहे।

लूत ने अब्राहम को छोड़ दिया, लेकिन अब्राहम ने कोई कड़वाहट उसके दिल में आने नहीं दी। वहाँ लूत और अब्राहम के सेवकों के बीच झगड़े थे, लेकिन अब्राहम ने झगड़ों को उसे परेशान करने नहीं दिया। अंत में, जब लूत और उसके परिवार को बंदी ले जाया गया, वह हथियारों से लैस अपने तीन सौ अठारह प्रशिक्षित सेवकों को जो उसके घर में पैदा हुए थे दान जितना दूर पीछा करते गया। उसने उनके खिलाफ़ रात को अपनी सेना विभाजित किया और वह और उसके सेवकों ने उन पर हमला और उनका पीछा होबा जितना दूर किया जो दमिश्क के उत्तर में है। इस तरह से उसने सभी वस्तुओं को वापस लाया, यहाँ तक कि अपने भाई लूत और उसके सामान को भी वापस लाया, महिलाओं और लोगों को भी वापस लाया।

दाऊद में एक ऐसा क्षमाशील हृदय है। उसे नष्ट करने के लिए जब शाऊल उसका शिकार कर रहा था, परमेश्वर ने जब शाऊल को उसके हाथ में दिया तब भी उसने उसका नुकसान नहीं किया। दाऊद ने शाऊल को माफ़ कर दिया। जब शाऊल की मृत्यु हो गई तब दाऊद ने अंत तक उसके पोते मपीबोशेत का ख्याल रखा।

प्रिय बच्चों, हम में एक क्षमाशील हृदय होना चाहिए। हम में क्षमाशील हृदय होने के लिए हमें कलवरी के क्रूस की ओर देखना चाहिए हमारा अच्छा प्रभु तुम्हारे हृदयों में वह प्यार दें। इसलिए एक दूसरे को माफ़ कर दो और अपने अपने हृदयों में शांति प्राप्त कर लो। हमारे फिर मिलने तक, परमेश्वर की शांति तुम्हारे संग रहे।

– पास्टर सरोजा म.

परमेश्वर हमारे साथ

यहोशू १रू५ – तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर नहीं सकेगा। जिस प्रकार मैं मूसा के साथ रहा उसी प्रकार तेरे साथ भी रहूंगा। न तो मैं तुझे धोका दूंगा और न त्यागूंगा। परमेश्वर यह वादा यहोशू को दे रहा है कि वह उसके साथ रहेगा। शुरुआत से अगर हम पवित्र शास्त्र में पुराने करार को पढ़ते हैं, हम देखते हैं की प्रभु अब्राहाम, इसहाक और याकूब के लिए एक समान वादा दे रहा है। नए करार में, वह अपने चेलों को यह वादा दे रहा है। हम पढ़ें मत्ति २८रू२० – और जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी है उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूं। यह वादा जो उसने उसके चुने हुए शिष्यों को दिया था एक समान है जो परमेश्वर ने पुराने नियम में यहोशू को दिया था। हमें पता है इस दुनिया में सभी लोग भरोसेमंद नहीं हैं। कोई फ़र्क नहीं पड़ता वें क्या वादा करते हैं, वे जल्द ही अपने वादे से बदल जाते हैं। लोग बहुत जल्द बदल सकते हैं, लेकिन हमारा महान परमेश्वर ऐसा नहीं है, एक बार वह एक वादा देता है, उसका वादा सुनिश्चित और स्थापित होता है। वह निश्चित रूप से उसे पूरा करेगा। हम पढ़ें इब्रानियों १३रू८ – येशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक–सा है। हालांकि इस दुनिया में सभी लोग बदल सकते हैं, लेकिन हमारा प्यारा येशु मसीह कभी नहीं बदलेगा। वही वादा, हमारे लिए आज है, जैसे प्रभु ने अब्राहाम, इसहाक, याकूब, यहोशू और अपने शिष्यों को उनकी उपस्थिति का वादा दिया था, आज उसने भी हमें उसकी उपस्थिति का वादा दिया है। हम यह वादा क्या है देख सकते हैं मत्ति १रू२३ में – ष्देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी, वह एक पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,ष जिसका अर्थ है, ष्परमेश्वर हमारे साथष। हमारे मुक्तिदाता का नाम क्या है? परमेश्वर हमारे साथ। वही परमेश्वर जिसने यहोशू से वादा किया था कि वह उसके साथ होगा, येशु मसीह के द्वारा हमसे वादा करता है कि वह हमारे साथ होगा। जब हम येशु मसीह को स्वीकार करते हैं, तब वह आता है और हमारे साथ रहता है। हाल्लेलूयाह!

अब हम देखते हैं कि यहोशू हमेशा मूसा के साथ था। यह मूसा के मरने के बाद है कि परमेश्वर ने उसे वादा दिया। लेकिन अगर तुम पवित्र शास्त्र ध्यान से पढ़ोगे तो तुम जानोगे की यहोशू एक युवा रूप में भी, मूसा के करीब था। वह हमेशा हर चीज़ में मूसा की सेवा करता था। अगर मूसा के लिए कोई

काम होता, तो यहोशू उसे लगन से करने के लिए दौड़ता। वह हमेशा मूसा के साथ रहता। यही कारण है कि परमेश्वर की उपस्थिति का वही आशिष यहोशू पर आया।

एक कहावत है कि जब आप एक जंगली पेड़ की टहनी को एक चंदन की लकड़ी की छड़ी के संग रखते हैं, वह टहनी स्वचालित रूप से चंदन की लकड़ी की खुशबू देगी। कई साल पहले, मेरे प्रभु में आने से पहले, मेरे पास चंदन की लकड़ी की एक माला थी जो मैं हमेशा मेरी अलमारी में रखती। जब भी मैं अलमारी खोलती, दिन या रात के किसी भी समय, मुझे हमेशा उसकी मीठी खुशबू मिलती, हर दूसरे इत्र से ऊपर। मैंने जब येशु मसीह को स्वीकार किया, मैंने उस माला को फेंक दिया। आज, मेरे जीवन में प्रभु येशु मसीह की खुशबू है। इसी तरह, जब हम प्रभु के साथ रहते हैं, हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की खुशबू और आशीष के वाहक बन जाते हैं। हालांकि, कई बार हमें दुश्मन, शैतान द्वारा बाधा आता है। जहां कही या अन्य तरिके से वह हमें प्रभु का साथ रहने से बाधा डालने की कोशिश करता है। जब भी हम परमेश्वर के चुने लोगों के साथ एक साथ होना चाहते हैं, या एक साथ मिलकर और प्रार्थना या गाना गाते हैं, वह हमेशा बाधा और इस तरह के समारोहों को तोड़ने की कोशिश करता है। वह खुश नहीं है जब हम एक साथ आते हैं। अब यहोशू मूसा के साथ हमेशा से था। वह हमेशा हर काम में मूसा के साथ स्थायी किया करता था। यही कारण है कि परमेश्वर ने मूसा के बाद यहोशू को चुना। अगर हम पढ़ें निर्गमन ३३रू११ – यहोवा, मूसा से आमने–सामने इस प्रकार बातें करता था,जिस प्रकार कोई मनुष्य अपने मित्र से बातें करता है। जब मूसा छावनी में लौट आता, तब उसका सेवक, नून का नवजवान पुत्र यहोशू तम्बू से बाहर नहीं निकलता था। यहाँ हम देखते हैं कि जब परमेश्वर तम्बू में मूसा से बोलता, तो यहोशू हमेशा मूसा के लिए बाहर इंतज़ार करता और फिर तम्बू में रहता था। परमेश्वर उस से बात करने के बाद, वह मूसा से मिलने के लिए तरसता था। यहोशू पता करने के लिए प्यासा हुआ होगा कि प्रभु ने मूसा से क्या प्रगट किया है। हम इस वचन में पढ़ते हैं कि यहोशू मूसा के लिए एक नौकर था और इतना ही नहीं, वह एक युवा भी था। हमें पता है कि आम तौर पर युवाँ दुनिया के प्रति हमेशा बहुत सक्रिय और संवेदनशील हैं। लेकिन हम इस युवा यहोशू को देखते हैं जो इस्राएलियों के छावनी के साथ होने की बजाय मूसा के साथ होने के लिए प्यासा था, उसकी सेवा करने के लिए और प्रभु उसके मुंह से क्या बात करेगा पता करने के लिए। यहोशू हमेशा प्रभु की आज्ञा इस्राएल के लोगों के विषय में क्या है पता करने के लिए इंतज़ार करता, ताकि वह उस

आज्ञा का पालन कर सके। यही कारण है कि प्रभु यहोशू को मूसा के बाद लोगों का नेतृत्व करने के लिए एक उपयुक्त आदमी होगा, जानता था। परमेश्वर को पता था कि वह परमेश्वर के मामलों और इस्राएल के लोगों के बारे में मेहनती था। यही कारण है कि परमेश्वर उसे वादा देता है। हम यह वचन को फिर से पढ़े, यहोशू १रू५ – तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर नहीं सकेगा। जिस प्रकार मैं मूसा के साथ रहा उसी प्रकार तेरे साथ भी रहूंगा। न तो मैं तुझे धोका दूंगा और न त्यागूंगा। हम देखते हैं कि परमेश्वर यहोशू के साथ था और एक शक्तिशालि तरीके से उसका इस्तेमाल किया। उसी तरह, आज अगर यह ज़रूरी है कि हम परमेश्वर के काम को हमारे जीवन में देखना चाहते हैं, हम उसके शक्तिशालि हाथ को हमारे जीवन में एक निश्चित परिस्थिति में काम करते हुए देखना चाहते हैं, यह आवश्यक है कि हमे उसके साथ रहना चाहिए। हम परमेश्वर में बने रहें। हमें पता नहीं प्रभु उसके काम के लिए किसे उठाएगा। इससे पहले कि प्रभु मेरे जीवन में आया मैं कभी नहीं जानती थी की मैं एक दिन प्रचार करूँगी। मैंने सपने में भी नहीं सोचा कि मैं एक पास्टर होंऊँगी। मेरे मन में यह कभी नहीं था की परमेश्वर इन वृद्धाश्रमों का निर्माण करने के लिए मुझे इस्तेमाल करेगा। लेकिन एक चीज़ था जो मैंने यत्न से किया; मैं हमेशा प्रभु में बने रहने के लिए अपनी पूरी कोशिश करती थी। इस कलिसियाँ के प्यार के कारण, मैं इस कलिसियाँ में प्रार्थना के लिए आया करती। यह सिर्फ़ शाम को प्रार्थना के समय के दौरान ही नहीं आती, यह केवल ३० मिनट के लिए ही था, लेकिन जब भी प्रभु मेरे दिल में यह इच्छा को रखता मैं हमेशा प्रार्थना के लिए तैयार रहती थी। हम एक साथ बैठकर घंटों प्रार्थना करते थे। प्रभु इन सब चीजों को देखता है। इसलिए हमें याद रखना चाहिए की प्रभु हम में से किसी को भी उपयोग कर सकता है। प्रभु के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। वह हमारे दिल, हमारे परिश्रम और हमारे प्यार को देखता है और फिर उस के अनुसार हमें आशीष देता है। उस समय कलिसियाँ में परमेश्वर के कई महान लोग थे। कई दशकों से प्रभु में विश्वासी थे। कुछ प्रभु से प्रार्थना करने में बहुत अच्छे थे। कुछ तो अद्भुत रिती से आराधना का अगुवाई करते थे। लेकिन प्रभु उन लोगों को खोजता है जो परमेश्वर के लिए उस महान प्यास और परिश्रम को रखते हैं। जब भी हम कलिसियाँ सेवाओं या प्रार्थना सभाओं के लिए आते हैं, हमें एक महान प्यास के साथ आना चाहिए। हमारा इन सेवाओं में शामिल होना रिवाज या बल के कारण नहीं होना चाहिए। हमारा महान प्यास प्रभु परमेश्वर की ओर होना चाहिए। हाँ, एक प्रेम और परमेश्वर के लिए एक प्यास। अब हम नबी एलीशा के जीवन में देखेंगे। हमें पता है क्या हुआ

जब परमेश्वर एलिय्याह, नबियों के महान नेता को पृथ्वी से ले लिया। एलीशा अपने गुरु एलिय्याह के साथ एक स्थायी रिश्ते में हमेशा से था। उसने उसे कभी नहीं छोड़ा। एलीशा हमेशा परमेश्वर की उपस्थिति के लिए प्यासी रहता था। और हमें पता है परमेश्वर एलिय्याह को दूर ले जाने के बाद, उसका दास एलीशा एलिय्याह के एक दुगने अभिषेक से भर गया और वह नबियों का नेता बन गया। हम पढ़ें २ राजा २रू१–१५ – और जब यहोवा एलिय्याह को आंधी के द्वारा आकाश पर उठा लेने पर था, तो ऐसा हुआ कि एलीशा को साथ लेकर एलिय्याह गिलाल से चला। और एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ष्अब तू यहां ठहर जा, क्योंकि यहोवा ने मुझे बेत–एल तक भेजा है।ष परन्तु एलीशा ने कहा, ष्यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे नहीं छोडूंगा।ष अतः वे बेत–एल को चले गए। तब नबियों के चेले जो बेत–एल में थे एलीशा के पास आकर उस से कहने लगे, ष्क्या तू जानता हैं कि यहोवा आज तुझ से तेरे स्वामी को ले लेगा?ष और उसने कहा, ष्हाँ, मैं जानता हूं, चुप रहो।ष और एलिय्याह ने उस से कहा, ष्एलीशा, अब तू यहीं ठहर जा, क्योंकि यहोवा ने मुझे यरीहो को भेजा है।ष परन्तु उसने कहा, ष्यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे नहीं छोडूंगा।ष अतः वे यरीहो को आए। और नबियों के चेले जो यरीहो में थे, एलीशा के पास आकर उस से कहने लगे, ष्क्या तू जानता है कि यहोवा आज तुझ से तेरे स्वामी को ले लेगा?ष और उसने उत्तर दिया, ष्हां, मैं जानता हूं, चुप रहो।ष तब एलिय्याह ने उस से कहा, ष्अब तू यहीं ठहर जा, क्योंकि यहोवा ने मुझे यर्दन को भेजा है।ष और उसने कहा, ष्यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ, मैं तुझे नहीं छोडूंगा।ष अतः वे दोनो आगे बढ़ते गए। अब नबियों के चेलों में से पचास जन जाकर उनके सामने दूर खड़े हो गए, और वे दोनों यर्दन के किनारे खड़े हुए। और एलिय्याह ने अपनी चादर को बटकर जल पर मारा, और जल इधर–उधर विभाजित हो गया। तब वे दोनों सूखी भूमि पर चलकर पार उतर गए। और ऐसा हुआ कि जब वे पार हो गए तो एलिय्याह ने एलीशा से कहा, ष्इस से पहले कि मैं तेरे सम्मुख उठा लिया जाऊं, मांग कि मैं तेरे लिए क्या करूं,ष एलीशा ने कहा, ष्तेरी आत्मा का दुगुना अंश मुझे मिले।ष और उसने कहा, ष्तू ने कठिन बात मांगी है। फिर भी यदि तू मुझे उस समय देख ले जब मैं उठा लिया जाऊं तो तेरे लिए ऐसा ही होगा; परन्तु यदि तू न देखे, तो ऐसा नहीं होगा।ष तब ऐसा हुआ कि जब वे बातें करते करते आगे चले जा रह थे, तो देखो, एक अग्नि–रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन दोनो को अलग कर दिया। और एलिय्याह बवण्ड़र के द्वारा ऊपर आकाश पर चढ़ गया। एलीशा ने इसे देखा और पुकार उठा, ष्हाय मेरे पिता, मेरे पिता! इस्राएल के रथ और घ

ुड़सवारो!ष तब उसने अपने वस्त्र पकड़े और उन्हें चीर कर दो टुकड़े कर दिए। फिर वह एलिय्याह की उस चादर को भी जो उस पर से गिरी थी उठाकर लौटा और यर्दन के किनारे खड़ा हुआ। तब उसने एलिय्याह की चादर जो उस पर से गिरी थी ली और यह कहकर जल पर मारा : ष्एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा कहां है?ष और जब उसने भी जल पर मारा तो जल इधर–उधर विभाजित हो गया; और एलिशा पार हो गया। जब नबियों के चेलों ने जो यरीहो में उसके सामने थे, उसे देखा तो कहा, ष्एलिय्याह की आत्मा एलीशा पर ठहरी है,ष अतः वे उस से मिलने को आए और उन्होंने उसके सामने भूमि पर गिरकर उसे दण्डवत् किया। विचार करो, एक बार नहीं, दो बार नहीं, तीसरी बार भी एलीशा ने एलिय्याह को अकेले नहीं छोड़ा। एलिय्याह ने कहा कि वह यर्दन के दूसरी ओर जा रहा था। लेकिन एलीशा को देखों उसने कैसे जवाब दिया। उसने परमेश्वर और एलिय्याह के जीवन कि शपथ खाई कि वह उसे नहीं छोड़गा।

बस उसके प्यार, उसकी प्यास, उसके उत्साह को देखो। इन सभी तीन बार, एलीशा ने अपने गुरु के करीब निवास किया। उसके बाद हम पढ़ते हैं एलिजा उसकी चादर के साथ यर्दन को मारा और उसे विभाजित कर दिया। एलीशा की एक दुगना भाग के इच्छा को सुनने के बाद, एलिय्याह उसे एक शर्त देता है कि अगर वह उसे स्वर्ग में जाते देखता है, वह यह दुगना भाग पाएगा क्योंकि वह एक मुश्किल काम था जो उसने पूछा था। लेकिन किसी भी तरीके से एलीशा ने निराश महसूस नहीं किया; उसने खुद को अपने गुरु के करीब रखा। हम देखते हैं कि एलिजा देखता है कि कैसे एलिय्याह ऊपर लिया जाता है। एलिय्याह का गिरा हुआ चादर उठाता है। अब पश्चाताप और उत्साह के एक महान हृदय के साथ हम देखते हैं वह वही काम कर रहा है जो उसके स्वामी एलिय्याह ने किया था। वह को बटकर जल पर मारा और यर्दन को विभाजित करता है।

वही चमत्कार! यर्दन नदी विभाजित होती है। इसी तरह, यह आसान नहीं है परमेश्वर का अनोखा उपहार और आशीष प्राप्त करना। हर परिस्थिति में, हमें परमेश्वर के करीब रहना चाहिए। हमें उसके वचन को मानना चाहिए। यह केवल होंठ से कहने से संभव नहीं है।

हम अपने हृदय के साथ प्रभु का अनुसरण करना चाहिए। हम यहोशू और एलीशा के जीवन में देखते हैं कि वे हृदय से परमेश्वर के लिए प्यासे थे। यही कारण है, कुछ समय के बाद, परमेश्वर ने उनके जीवन में उन्हें यह आशीष दिया। हमें पढ़ें क्या वही परमेश्वर हमें आज क्या कह रहा है **यशायाह** ४१रू१५, १४ में – देख, मैंने तुझे एक नया, दो धारी, तेज़ दांवने का हेंगा

ठहराया है। तू पर्वतों को दांवकर चूर चूर कर देगा और पहाड़ियों को भूसा बना डालेगा। हे कीडे याकूब, हे इस्राएल के मनुष्यों, डरो मत। यहोवा की यह वाणी है: ‘मैं तेरी सहायता करूंगा। इस्राएल का पवित्र ही तेरा छुड़ानेवाला है। परमेश्वर हमें आज क्या वचन दे रहा है? याकूब अपने आप को एक कीड़े के समान सोचता था। वह जानता था कि वह कुछ भी नहीं कर सकता है अपने ही ज्ञान और शक्ति के साथ। परन्तु परमेश्वर, उसे प्रोत्साहित कर रहा है कह कर कि हालांकि वह एक कीड़े के समान सोचता था, लेकिन परमेश्वर उसे पहाड़ों को तोड़ने के लिए एक शक्तिशालि साधन बनाएगा। हाल्लेलूयाह। वैसे ही जैसे, प्रभु ने यहोशू, एलीशा और अपने चेलों से बात की थी, परमेश्वर याकूब को प्रोत्साहित कर रहा है। आज, हमारे प्रभु से इस तरह के आशीष पाने के लिए, हमें उससे प्यार करना चाहिए और उसमें बने रहना चाहिए । परमेश्वर हमें पूर्ण शांति देगा। यशायाह २६रू३ पढ़ें – जिसका मन तुझ में लगा है, उसकी शांति तेरे द्वारा पूरी बनी रहेगी, क्योंकि उसका भरोसा तुझ पर है। अगर एक में प्यार नहीं है, वह विश्वास में नहीं चल सकता है। यह यहोशू और एलीशा के दिलों में प्यार था उन्होंने अपने स्वामियों को नहीं छोड़ा है। जब हम प्यार करते हैं और परमेश्वर में विश्वास रखते हैं हम कभी नहीं गिरेंगे। हम बड़े बड़े काम की उम्मीद कर सकते परमेश्वर से। अब हम देखते हैं कि दाऊद क्या कहता है;भजन संहिता २२रू६ – परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं, मनुष्यों द्वारा निनदित और लोगों द्वारा तिरस्कृत। हम देखते हैं कि दाऊद स्वयं के बारे में कीड़ा समझता है, लेकिन प्रभु ने उसे उसके जीवन के हर परिस्थिति में विजय दिया। उसने गोलियत, शाऊल और पलिश्तियों पर भी विजय पाया। यह विजय उसके जीवन में क्यों था? यह इस कारण था क्योंकि दाऊद एक इन्सान था जो परमेश्वर के मन के अनुसार था। वह परमेश्वर से बहुत प्यार करता था और उसके करीब रहता था। वह उसमें बने रहता था। उसी तरह, हम भी इन महान आशीष को प्राप्त कर सकते हैं, जब हम परमेश्वर में बने रहते हैं। हमें अपने स्वयं के बुद्धि पर हमारी योग्यता या अपने स्वयं के ताकत पर निर्भर कभी नहीं करना चाहिए। हमें खुद के बारे में एक बेकार कीड़े की तरह सोचना चाहिए। अगर आज परमेश्वर, हमारी नाक से सांस निकाल देता है, कल इस समय तक हमारे मांस को कीड़े खाने लगेंगे। यह बहुत आवश्यक है कि हम प्यार करें और हमारे परमेश्वर पर भरोसा करें। यह तो तब है कि वह हमे विजय देता है हर परिस्थिति में। आज, हम सोच सकते हैं हम में कोई शक्ति या बुद्धि नहीं हैं। लेकिन यह इस समय है उस पर परमेश्वर हमें खड़ा कर देगा और वह हमारे लिए काम करेगा, लेकिन तब जब हम प्यार करते हैं और उस पर विश्वास

करते हैं। हम फिर से यशायाह २६रू३ पढ़े – जिसका मन तुझ में लगा है, उसकी शांति तेरे द्वारा पूरी बनी रहेगी, क्योंकि उसका भरोसा तुझ पर है। हमारा मन हमेशा प्रभु की ओर होना चाहिए, हमारे परिश्रम, हमारी प्यास और उत्साह प्रभु की ओर निर्देशित किए जाने चाहिए। और हम में परिपूर्ण शांति होगा। प्रभु यहोशू के साथ कैसे था, एलीशा, याकूब और दाऊद, वह आज हमारे साथ होगा, और हमारे माध्यम से शक्तिशालि काम करेगा।
हम पढ़े १ कुरिन्थियों ४रू१३ – जब हम बदनाम किए जाते है तो मेल करने का प्रयत्न करते हैं। हम अब तक मानो संसार का मैल व सब वस्तुओं का कूड़ा–करकट बने हुए हैं।
पौलुस क्या कह रहा है? वह ऐसा कहता है कि यह दुनिया उसे देखता है दुनिया की गंदगी के रूप में। याकूब और दाऊद जैसे अपने आप को कीड़ों के रूप में देखते हैं पौलुस भी वैसे ही अपने आप को सारे वस्तुओं में तुच्छ समझता है। लेकिन हम देखते हैं कि कैसे शकतिशालि रूप में परमेश्वर ने इस मनुष्य का उपयोग किया, कितने ही कीमती पत्रकाव्य जो उसने लिखा है वें पवित्र शास्त्र में शामिल किए गए हैं। कितने सारे कलिसियाओं की स्थापना उसने की? आज भी हमे अपने बारे में कुछ नहीं सोचना चाहिए, लेकिन पूरी तरह से प्यार करना है और जीवित परमेश्वर और उसके वचन के लिए प्यासा होना हैं, यह तब है कि हम कुछ बनेंगे। इन लोगों के बारे में सोचो, कैसे उन्होंने परमेश्वर के लिए इंतज़ार किया।

वही था कारण परमेश्वर की उपस्थिति उनके संग रहने का और उनके द्वारा शक्तिशालि रूप से कार्य कर रहा था। वह हमारे जीवन में आज यही कर सकता है।
हाल्लेलूयाह।

– पास्टर सरोजा म.